Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Pat 1

13.B.3. Hindi Pat 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Viśvavinaya.

Bisho Binah

विश्वविनय

श्रीरामचन्द्र पदारविन्दानुरागी विज्ञानपरायण
फ़ैज़ाबाद निवासि श्रीस्वामि पतितदासकृत

जिसमें

भक्त भय भञ्जन माया कृत दोष गञ्जन असुर दल
खण्डन साधुजन रञ्जन श्रीपरब्रह्मपरमेश्वरकी विनय
दोहा आदि सरलछन्दोंमें
वर्णित है

वही

लाला ठाकुर प्रसाद नायब रिआसत सीही पुर की
सहायता से

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

जुलाई सन १८८० ईसवी

श्रीगणेशायनमः

अथ विश्वविनय

पतित दासकृत

लिख्यते

दोहा

गणपति इष्ट मनावऊं फलदातासरदार॥
दास पतित तव शरण हैं करगहि करो उबार १
गुरु आदि सब सृष्टि को विनय करौं परनाम॥
भूले बिसरे अक्षर हु पूर्ण करो मम काम॥२
मम मति स्वल्प अगाध पद असक छुदीजंग
भाषौं बिनय जगनाथ की पद न होय कहुभंग३

चौपाई

निरंकार के चरण मनाई*। जाकी शक्ति रही जग छाई॥
है साहब वह अजब खेलारी। कारण कर्त्ता फेरि है न्यारी॥
आप सुधर्मी फिर अपकारी। आपद चेतहि फेरि बिसारी
दो० चित व्याकुल तन पीर सों सूझि परत कछु नाहिं
चिंता शोच मिटाय सब बसहु नाथ उर माहिं४
सुमिरौं जननी जक्तभवानी। गोगोचर महंताहि निशानी॥
आदि शक्ति तुम अगम अपारा। बरणि कोसकै तोर अवतारा॥
जितने दुष्ट भये जग आई। अपनी शक्ति से दियो मिटाई*

ब्रह्मा विष्णु महेश गणेशा। कलिहु पसार तोर उपदेशा।
दो॰ सो बल पौरुष शक्ति युत मोहि पर होहु दयाल
अब बिलंब नहिं कीजिये जननी करु प्रतिपाल ५
अब सुमिरौं अंजनि सुत वीरा। राम के दूत महा रण धीरा
पवन तनय संतन हितकारी। मेटत गाढ़ सकल अघभारी
दुष्टन मारि क्षणक में डारे। हरि बाना का शर्म निहारे
दो॰ बल पौरुष अरु तेज गुण वरणि सकै को गाय।
यहि अवसर मोहिं राखिये साहब लेहु बचाय ६
जै जै जै जगदीश्वर स्वामी॥। अब कस मौन भे अन्तरयामी
युग युग नाथ दुष्ट सब मारे। करत पुकार सो तुरत सिधारे
जन हित नाथ प्रतिज्ञा त्यागी॥ अस्त्र गह्यो निज मारण लागी
बल पौरुष बहु किह्यो उपाई। सो लीला श्रुति पाहन पाई
सो बल पौरुष अब कस हारा॥ सुनहु न स्वामी बहुत पुकारा
बकसहु नाथ चूक अब मोरी ×। विनवौं नाथ दोऊ कर जोरी
अब गुण भरो बहुत अपकारी। धर्म छांड़ि बहु करहु लबारी
सो अब गुण प्रभु चित नहिं दीजे बाना कितो निज शरण करीजे
दो॰ शरणागत की निसर महं छांह करो शिर ताज
लाज गये फिरि का करब हंसी तोरि महराज ७
चाहौं तस मोहिं राखिये परउं चरण दै माथ॥
दास पतित की अरज यह विनती सुन यदुनाथ ८
देर भई देरत मोहिं द्वारे॥। सुनेन कोऊ मोर पुकारे।
होहु सहाय देर मति कीजे॥। सब विधि नाथ अपन कर लीजे
इतनी देर नाथ कहं लाई॥। बल हारेव की पौरुष सांई
की दूसर कर्त्ता मगटाई॥ *। ताहि देख तुम रह्यो डेराई
कितो सुदर्शन गो हरि हारी॥। धनुष बाण नहिं हाथ सम्हारी
अचरज एक नाथ मोहिं लागा। कारण कौन देर यह लागा

हमतो सुना हरि दीनदयाला। शरण गये प्रभु करि प्रतिपाला
ऐस दयाल शील के सागर।। बरणि को सकै सभी गुण आगर
पापीपतित शरण जो आये। ताको हरि निज धाम पठाये।
कैसो मूर्ख होय अपकारी।। जन अवगुण हरि नाहिं बिचारी
इतनासुयश सुना हमनाथा। बे गाहिं अधमहिं कियो सनाथा
दो॰ बहुत सनाथ नाथ करि टेर सुनेहु गज राज।।
अब बिलंब केहि कारण जगदीश्वर महराज ९
पापीपतित नाथ तुम तारो। तोमोहिं कस तुम नाथ बिसारो
ऐसी तर्क नाथ जिय आवे। कहिन सकों जिय अधिक डेरावे
हम अपने जिय याहि बिचारा स्वारथ हित नहिं सभे परारा।
देव दिगम्बर आदिक कोई। स्वारथ पाय मीत सब होई।।
हे दयाल यह नाहिं बिचारो। बाना की निज शरम निहारो।
करणी मोर बूझो न हिं सांई। शरण परे अबलेहु बचाई।।
कैसहु करों नाथ कुटिलाई।। ताहूपर निज तोर कहाई ॥
तातें अर्ज करों कर जोरी।।। दीनदयाल राख पति मोरी।।
अवगुण नाथ न मोर निहारी। नाहिं तो होइहै हासि तुम्हारी
दो॰ दलि मलि दुष्ट नाथ सब संतन किहे उधार।।
तैसे पति प्रभु राखिये सब बिधि दास तुम्हार १०
गुण स्वारथ सब मीति कराई। बाकी हरि है कबाने बड़ाई।।
युगयुग रीति बेद अस गाई। करु करु छांह न सरवहु निचाई
पर शरण पर मीति लगाई। भये बिमुख तब करि कुटिलाई
हित बैरी जो शरण निज आई पर शरण फिरि नाहिं दुराई।।
या दरबार में अचरज होई।। अस अनीत सुना नहिं कोई।
सुख में जो नित बैर बढ़ाई। पर भीर जो सनमुख आई।।
ता वहि को हरि आपन करि लीजै। पिछलो अवगुण चित नहिं दीजै
बल अरु बुद्धि थोरि अति मोरी। केहि बिधि बिनय करों कर जोरी

विद्या नहीं योग वैराग्य ॥ जपतप ध्यान नहीं अनुराग
पूजन दान भक्ति नहिं जाना। करहु कवन मैं बिनय बखाना
ताही से हरि मोहिं बिसारी॥ शरणागत नहिं सर्म निहारी।
दो॰ शरण गये सब की हरि तुरतहि सुनी पुकार।
अब बिलंब कस लायउ प्रगट होहु करतार॥ १
कै सोइ पुत्र महा अपकारी। तजेन मोह पिता महतारी॥
पशु अरु पक्षिहु हेत कराहीं। स्वारथ तो उन से कछु नाहीं।
आपन सींच जानि के सांई। बोरत नहीं भार सो पाई॥
अपने किलाज सभै करै स्वामी। कहहु काह तुम अंतर जामी
युगयुग रीति यही चलि आई दीनन को हरि दास बनाई।
इच्छारहित तूं अहोगुसांई। जन के कारण रूप धराई॥
जहं जहं जन भे बिकल व्यहाला॥ तहं तुरतहिं भयो प्रगट कृपाला
जन के हेतु सकल हरि कीन्हा। भलु अरु पोच नहीं प्रभु चीन्हा
दो॰ देर भई अतिनाथ अब किन राखेउ बलभाय।
लाज गये फिर का करहु प्रगट होहु अब आय १
बूड़त हौं भव सागर हिं सूझै वार न पार॥
चरण शरण प्रभु शरण हौं कर गहि करौ उबार १३
मच्छरूप जब धरयो गोसांई। सगरी बसुधा पीठि चढ़ाई।
शूकर कूकर लै अवतारा। कूर्म रूप प्रगटेव कर तारा
शरवासुर जब दानव मारी। दुष्ट अनेकन तुरत संहारी।
बावन ह्वै हरि भिक्षा लीन्हा तेहि छरा पृथिवी को निज कीन्हा
आधे पग कहं पीठि न पाई। तबहीं बलिहिं पतालि पठाई।
ऐसो दीन बन्धु हितकारी। जन कि परण तुम राखु मुरारी
मंजारिहिं के बाल बचाई। आंवा बीच जरन नहिं पाई।
जन प्रह्लाद तबहिं हठ माना। रामहु राम सकल जग जाना
दो॰ राम नाम रटलागि रहि सोवत जागत खात॥

समझायो पितु कोटि बिधि एक न मानी बात १४
सोरठ अंधपिता तोहि सूझत नाहिं रामभजौ नहिं तनतजउ
गही चरण चित माहिं छांडि सकल संतापभज १५
दो॰ भजन रहित नर जगतमें बिषय अनेकन साज
ति नसों भले परवान पशु पतित दास बड़ि लाज १६
जन प्रहलाद यही मत ठाना। अमित रूप प्रगटे भगवाना।
जहँ जहँ गाढ़ परे दुख भारी। तहँ तहँ तुरतहिं जाय उबारी।
नाना दंड पितहिं दिखरावा तात बाव तन लगहि न पावा।
जरत अग्नि में दीन डराई॥ तहँ वां हरि तुम तुरत बचाई।
पर्वत तें लै डारि सो दीन्हा। उपरहिं आय राखि हरि लीन्हा
खंभ में लाय बांधि सो दीन्हा॥ काढ़ि कृपान शीश पर कीन्हा।
कहुरे राम तोर कब आइ है॥ मारत हौं तोहिं बचै न पाइ है॥
जन प्रहलाद के बिसमें नाई। अबहूं मूरख चेत कराई॥
दो॰ चेतत नाहीं मन्द मति नहक बढ़ावत रारि।
मारा चहत जो दास को ताही हनत मुरारि १७।
सो॰ दृढ़ राखै बिस्वास हानि होय किमि भक्त की
सदा रहत हरि पास दास पतित मत बूझरे १८
नरसिंह रूप तुरत हरि धारा॥ हिरना कुश को उदर बिदारा
मारि कै दुष्ट डारि महि दीना॥ सुमन वृष्टि सुर स्वर्ग मे कीना
जै जैकार करत सब देवा॥ अस्तुत बिनय करत बहु सेवा
सो प्रताप कहवां हरि गयऊ। मोरी बार देर कस भयऊ॥
ध्रुव कह दरश दिह्यो ततकाला योग अरु भोग दोऊ मसिपाला
दै के दरश अचल हरि कीना॥ भयो अडोल अचल पद दीना
जन कराय की लज्जा राखेव॥ तोरेहु धनुष बचन नहिं भाषेव
मन वांछित फल सिय कहं दीन्हा अय स्वयंवर माला लीन्हा॥
परशुराम को मान छोड़ावा लै आज्ञा मुनि बन हि सिधावा

दो॰ त्रेता राम वतार में लीला कोटि अपार ॥
देवन बन्दि छुड़ाय के राक्षस कियउ संहार १९

सो॰ मिटि गै देवन त्रास रामराज जा दिन भयो
घर घर मंगल वास । दुष्टन को सब नाश करि २०

ऋषि गौतम की पत्नी तारी। बिश्वामित्र को यज्ञ सँवारी।
चित्र कूट धाम निज कीन्हा। पंचबटी पावन करि दीन्हा *
गिद्ध व्याध अजामिल तारी। सेवरी गनिका धाम सिधारी।
बलि बैर हठि जन सो कीन्हा ॥ ताको प्राण एक शर लीन्हा ॥
बाको पुत्र शरण जब आवा ताको हरि युवराज बनावा * ।
सो तो रहेव आधिक बहुप्यारा। यहि दरबार में दास दुलारा
नीच ऊंच की गिनती नाहीं। शरणहि गये करैं कर छाहीं॥
मोरि बार कस भयो कठोरा ॥ चितवहु नाथ नजर की कोरा

दो॰ कोमल चित्त दयाल हरि राखहु मोर दुलार
त्रास मिटा वहु आनहरि बिनती सुन करतार २१

जा दिन गाढ़ बिभीषण भयऊ। रावण दंड बहुत ही दयऊ *
तेहि कारण मुनि कृपा निकेता जाइ सिंधु बिच बांध्यो सेता
दुष्टहि मारि किहेव संहारा *। सोनको लंक कीन्ह जरि छारा
सब देवन को बन्दि छुड़ाई ॥ फिरी लंक मह राम दुहाई ॥ *
सो अब राज्य विभीषण पाई ॥ करनिःशंक दीन्ह रघुराई ॥
ऐस दयाल अगम घर स्वामी। तेहि चरणन को करों नमामी
मोपर दयाल दया कब करिहो। यहि भवसे कब नाथ उबरिहो
अब तो नाथ रही कुछु नाहीं * दिन औ रात शोच मन माहीं

दो॰ बिरह विकल दिन रात अब होत न जपतप ध्यान
तुम बिन के पार लगावे सुनिये श्रीभगवान २२

सो॰ नाथ करहु निज दास मेरि देहु भव भीर सब ॥
निजरहों चरण के पास रामनाम छूटै नहीं २३

तुम्हरी रीझ जानि नहिं जाई ॥ रीझन कह ऐसो जात दुराई॥
साहूकार जहाज किताई ॥ सधन भक्तकों ध्यान लगाई
जन हित हेत पीठ प्रभु दीन्हा कीन्हो उबार लाज हरि कीन्हा
शंकर बिपति परी जब भारी ॥ भस्मासुर निज रारि पसारी
भागि फिरे कहुं ठौर न पावा। ऐसो दुष्ट बहु त्रास दिखावा
सतीरूप जब धरेउ मुरारी ॥ मारेहु असुर मिटा दुख भारी
बेद बिदित जग कीर्ति तुम्हरी जनहित जाप हते अपकारी
सुनत पुकार तुरत उठि धायो॥ अबकी नाथ कवन बेलभायो

दो॰ देव दिगम्बर पूजि सब हारि गयो मनमोर॥
शरण तुम्हारी आयउं राखहु बन्दी छोर २४

जोजो सुमिरयो नाम तुम्हारा। ताके रहहु सदा रखवारा
जनके बश्य सदा भगवाना ॥ जसजन याचै सो मत ठाना
द्वापर जाय लियो अवतारा। बिबिध खेल तहं कियउ पसारा
कहा कहूं कछु कहा न जाई॥ हरि के चरित थाह किन पाई
जाकर रचा सकल संसारा ॥ तिनयह कियो अधिक बिस्तारा
को अस सकै नाम गुण गाई॥ शेष शारदा पार न पाई
जनहित नाथ सहेव दुख भारी। जनकर शंकट तुरत उबारी
कंसहिं कियो बहुत उपहासा॥ चले अनीत धर्म्म करि नासा
ताकर भार सहो नहिं जाई ॥ तब ही जन्म लियो हरि आई

दो॰ देवकी के गृह जन्म लियो मथुरा बहुत बिलास
सखा सखी आनन्द कियो करि दुष्टन को नाश २५

गोकुल लीला कही न जाई ॥ बालक है नित पलना झुलाई
पीवत क्षीर पूतना हिं मारी ॥ लखेहु न काहू खेल मुरारी
ताको नाथ अपन पद दीन्हा। दुश्मन भेद नहीं चित चीन्हा
कवनिहुं बिधि तें शरणहि आवै॥ होय निहाल सकल फल पावै
ऐसो दयाल दीनके दाता ॥ मोरि बार कस निठुर बिधाता

॥ काली को तुम मान हटावा॥ जमलार्जुन को धास पठावा
॥ अघा असुर को मारि गिरावा कपट भेद छलन हित आवा
बकासुर को बध तुम कीन्हा। अपकारिन कहं बचे न दीहा
दो॰ सब यह सृष्टि चराचर साहब रची तुम्हार
दुष्टन मारि संहरेउ संतन किहेउ उबार २६
सो॰ बान्हा की करि प्रतिपाल आनि उबारन तुरत हरि
ऐसो दीन दयाल युग युग छांह सदैव कीर २७
दीनबंधु अस दानि सदा रहत रखवारि हरि
तब हूं न चेत अभिमानि ऐसो निलज गवारहै २८
बिषइन संग बिहाल नाहिन बुद्धि सम्हारत
द्रवहीं कैसे दयाल तुरतहिं आनि उबारई॥२९
दास पतित सुन बात हीन रहौं संसार सों
सकल बात बनि जात दुष्ट मेरे अपकार सों॥३०
गोपी ग्वाल सखा सब आई। कुंजन में हरि तुम्हें न चाई।
तुम नाचो सखियन दै तारी। । होत बिहार मंगला चारी।
आपतो मुरली लेत तुम्हारी। तुम कहं अभरण औ दे सारी
सौ सौ यतन से नाच नचाई। रास मंडल कवने असगाई
तब तो नाथ लाज नहिं आई। मेरी बार कस देर लगाई॥
निश दिन शोच बिकल मोर माना जपतप दान होत नहिं ध्याना
भाग फिरउं नहिं लाग ठिकाना। तब हरि तुम्हारी शरण लुकाना
आय शरण नहिं त्यागो सोई। करि निर्भय सब त्रास मिटाई
दो॰ पारस अव गुण नहिं लखे भलो बुरो जस होय
छूतहिं सुबरण करत है दास पतित मत सोय ३१
अरज हमारी नाथ जी सुनिये दीन दयाल॥
कपट किवाड़ी दूर करि मिटे सकल जंजाल ३२
मुष्टिक मारि चंडूर गिरायो॥॥ पील मस्त को मारि हटायो।

कंस के कटक बचा नहिं कोई। उपजी कुमति गयो सब खोई
जहां कुमति तह दुख भयो नाना जहां सुमति तहं श्रीभगवाना
अप कारिन हरि देत मिटाई। रवि फैलत तम ओस बिलाई
कंस हि मारि विध्वंसन कीना। उग्रसेन को राज्य सो दीना *
कुबरिहिं कियो प्राणसे प्यारी। गोपी भई चरण बलिहारी।
कृपा कर परन तुम राखी॥ *। सुनि गुनि लिखा दीख नहिं आखी
दो॰ मति बुद्धि थोरी मोरि है अवगुण भरो बिकार।
चूक हमारी क्षमहु प्रभु खेद लगावहु पार॥ ३३
रुक्मिणि ब्याहि कीन्ह बिस्तारा। रुक्मवाद कर मान निवारा॥
सतिभामा यह प्रण जो कीन्हा। ताको नाथ दरश तुम दीन्हा
ताहि ब्याहि प्रभु कियो पटरानी एक से एक है चतुर सयानी।
भूप बड़े बड़ मारि हटायो। बाणासुर से युद्ध मचायो *।
तुम कहं कौन गर्ज रही नाथा। जन के हेतु बढ़ायो गाथा *।
तजि रण क्षेत्र सो पीठ दिखाई। तब हीते रण छोर कहाई॥
काली मर्दन जा दिन कीन्हा। सांवर बरण रूप धरि दीन्हा।
मुरकह मारि मुरारि कहायो। देवकी की तुम बन्दि छुड़ायो
दो॰ बहुतन के दुख दरिद हरि बहुतन पद निर्बान
मेरी बार कस मौन हो सुनहु नाथ दै कान॥ ३४
इन्द्र मेघ कोपेउ जल धारा॥ कोपित है अस कीन बिचारा
मारो ब्रजहिं सकल बहि जाई ता क्षण प्रभु तुम भयो सहाई
भई सो वृष्टि सुगम जल कीन्हा नख पर गारि सकल गिरि लीन्हा
गिरि उठाय सब सखा बचावा इन्द्र को मान अरु गर्ब मिटावा
महाभारत जा दिन भे भारी। बटुरे शूरवीर अधिकारी॥
करक मध्य में सुनहु तुम सांई पक्षिहु टेर करन नहिं पाई।
राम नाम जबही उन टेरा॥ टूटि के घंट छिपाय बसेरा।
द्रुपद सुता की लाज बचाई। बाढ़ो चीर अंत नहिं पाई॥

खींचत खींचत भुज बल हारा। गयो लजाय सो चेति गँवारा
दो॰ द्रुपद सुता को राखिव हरि हरेउ दुशासन मान ॥
अर्जुन के भयो सारथी रथ हांकेउ भगवान ३५
कटक बहुत दुर्योधन जोरा । भजन बिहीने रहे मति थोरा।
कुल परिवार सकल चतुराई। राज्यपाट बहु द्रव्य उपाई।
सो सो यत्न सकल फैलाई । हरि बिहीन कोउ काम न आई
दुर्योधन अस कीन बिचारा । पांडव सुत कहं चहत निकारा
लक्षा गिरि तेइ कोट बनाई । तिन्हे फंसाय दियो फुकवाई
पांडव राज्य अचल भे सोई । जापर कृपा नाथ के होई
तेहि कौरव घर रहा न कोई। ताहि रिसाय करे क्या कोई।
दुर्बासा ऋषि दियो पठाई । धर्म पूत के है बड़ि सेवकाई
दो॰ यह सुनि आये संत सब पांडव सुत के द्वार ॥
ताहि बिथा तन बिकल भइ द्रुपदी शोच अपार ३६
द्रुपदी शोच भयो अति भारी। काह रचा उन संत दुवारी
हे यदुनाथ लाज जो जाई । फिरका करहु जगदीश गुसांई
कंद मोमूल नहीं घर दाना। साधु गये करन अस्नाना
ताहीं। समय आय हरि गयऊ । द्रुपदी देखि हरष मन भयऊ
बोले माधव हंसिकर बानी । लागि भूख कछु देहु सयानी ॥
कह द्रुपदी सुन प्रभु यदुराई । बिपति में बिपति अधिक तुम नाई
जोधा भोजन होत दयाला ॥ । काहे कतन अति होत बेहाला
भाजी रही सो भोजन कीन्हा। बर्तन धोय सकल धरि दीन्हा
सो बर्तन हरि लीन मँगाई ॥ । भाजी तनक लागि नहं पाई
दो॰ सो लेहरि भोजन किया साधू गये अघाय ॥
फेर द्वार आये नहीं भागे बहुरि लजाय ॥ ३७
अस भय भीर सबन की टारी। मोरि बार बल हारे मुरारी ॥
अंबरीष को नहक सताई ॥ । पठय सुदर्शन ताहि बचाई।

भागि फिरयो कहुं शरण न पाई। अंबरीष नहिं सके बचाई॥
जब फिरि राहु असुवह कीन्हा। हतत प्राण प्रभु दान सो दीना
एक समय दुर्वासा तीरा॥। गोपी गाई सकल। मसि धीरा।
व्यंजन बहुत बनाय के लाई। यमुना अगम कह्यो यह जाई।
जो हरि लिप्त न होहिं तो देहु उतारी। नाहिं उतारो तो जानो गारी॥
सोई व्यंजन मुनीश सब पावा। एक में सानि बिलग नहिं खावा
गोपिन कहा सुनहु मुनि ज्ञानी। केहि विधि उतरि अगम जल पानी
कह मुनीश सुनो नारि सयानी। यमुना से अस कहेउ बखानी।
आज कीन मुनि दूब अहारा॥ होहु थाह मोहिं देहु उतारा॥
दो॰ देखत यमुना थाह भई गोपिन दियो उतारि
हरि चाहो तैसो करो महिमा अगम तुम्हारि॥३८
गोपिन तर्क कीन मन माहीं। काह कही कछु आवत नाहीं।
अबही व्यंजन तुरत हम दीना। खाय मुनीश सोइ सब लीना॥
ऐसो दीन दयाल किशोरी॥। चितवत रहत भक्त की ओरी।
गर्वी को हरि मानत नाखा॥। वेद पुराण न अस कहि भाषा
और सृष्टि की कौन गनाई॥। यदु वंशिन कर नाश कराई॥
मुनि कर श्राप वृथा नहिं कीन्हा। जन अपमान दंड सो दीन्हा।
कुल परिवार सहित यदुनाथा। आपहु प्राण तजे निज साथा
जल बूड़त गजराज बचायो॥। हरिणी को हरि फंद छुड़ायो॥
दो॰ व्याधहिं काल भुअंग डसि स्वर्ग हि हनेउ सुबान
भजन भरोसे राम के पक्षी उबरे प्रान॥ ३९॥
जो कृपसागर सिल उतराना गोपद लांघि गये हनुमाना
ऐसो सिंधु महा अति भारी॥। कियो पान मुनि कृपा तुम्हारी
अवध पुरी कोउ मर्म न जाना। क्षण महं सबहिं मिले भगवाना
जहं भारथ कहं लीन्ह बचाई काढ़ि के खड्ग हतन जब धाई
मूरति फोरि शक्ति उपराजा। मारेहु राउ भक्त के काजा।

दास कबीरहिं सिंधु हटावा ।। नामदेव सो गाय जिया वा ।।
राज भरथरी अस मति ठानी। गोरख से निज कहेव बखानी
जो यह जीवै नारि हमारी ।भजौं मैं तोहिं तजौं संसारी
गोरख की हरि राखि बड़ाई ।क्षण एक अब लहि दयउ जिपाई
दो॰ विप्र को कंचन भवन करि मेटहु दुःख अपार
दास पतित जन जानि के पार करहु करतार ४०
मीरा सुयश कहां लै गाई ।कियेउ सनाथ कीर्ति जग छाई
बीज रहा सो साधन खायो ।बिना बीज हरि खेत जमायो ।।
पीपा भक्त सिंह उपदेशू ।। ।भयो सहाय सो मिटेव कलेशू
शिस्या देत साधु ह्वै गयऊ ।। माथे हुक्म सकल धरि लयऊ ।
इन भक्तन के कीन्हेव काजा। सेयउ जाय लखेव नहिं राजा ।।
करिमा की तुम रिच्छी खाई। भक्त हेत हरि छानि छवाई ।।
दुर्योधन घर मेवा त्यागी ।भाजी विदुर अधिक हित लागी
दास कबीर को आनि उबारा। रुचि सों कीन्हेंव संत अहारा ।।
दो॰ सब मिलि तिन की पतित केउ रह्यो कबीर लुकाय
साहब आनि जेवायो वाने लाज लजाय ४१
कर गहि सूरहिं लियो निकारी। दीनेंउ दरश किहेव पद भारी।
तुलसीदास चरण चित दीना। ताकहं नाथ अपन लघु कीना
नानक भयो नाम जपि पूरा ।सुलतान भयो और मन सूरा ।।
सेय्यद रोशन की काटेव बेरी। मोरी बार लाय कस देरी ।।
माधो दास की सेवा कीन्हा ।संकट माहिं अपन कर लीन्हा
तुमरी महिमा जानिन जाई ।बिष देते बिषया उन पाई
छूछी भरैं भरी ढर कीवें ।जब चाहैं तब फेरि भरावें ।।
कारण कर्ता सब के ईशा ।काहेन सुनहु मोरि जगदीशा
दो॰ दरिवया से सुरिवया करी तुरत दियो राजराज
गर्बी को तुरतहि हनेउ शरणागत की लाज ४२

भाडन की तुमराखेवलाजा। लेन प्रतिज्ञा बुलायो राजा।
अपने ठाकुर को लै आवहु। आजयहां तुम भोग लगावहु
कपट हेतु राजहिं लखि पाई। ध्वजा नारियल दियो पठाई।
तेहि क्षण नाथ मगट कसभयऊ भोजन खायसकल तुमलयऊ
राउर बार हार में पावा ॥ ॥ तुरत पुजारिहिं पकरि मंगावा
कहहु वार कहवां से लायहु। बहु बिधि राउ सो दंड देखायहु
तेहि कारण तुम केश जमाई मूर्ति बिशाल रही छबि छाई
देखत राव छकित ह्वै गयऊ। महिमा नाथ आप। नहिं दयऊ

दो॰ जाको हरि आपन कियो कौन मिटावन हार।
आठ पहर चौसठ घड़ी सदा रहत रखवार ४३

साहूकार की हुंडी सकारी। साह संवलिया भयो सुखारी॥
बलि के द्वारे नित तुम जाई। घर बैठे हरि दरश देखाई॥
नारद से तुम कह्यो जो बाता। जेतने आमिली में हैं पाता।
उतने कल्प बीति जब जाई॥ साधू दरश तबै मोर पाई॥
तेहि को दरश तुरत हरि दीना मनुके आप जन्म तुम लीना
कपिल देव नाम हरि कीन्हा। आपन बचन चिन्ह नहि दीन्हा
हरि की कला कहां लै गाई। शंभु बिरंचि शेश थकि जाई।
गरुड़ कि मोह मिटायहु नाथा ॥ काग भुशुंडहिं कियो सनाथा

दो॰ जहां माया अरु भ्रम नहीं होय नयन की चास।
राम कथा शुचि सुभग जहं तहां भुशुंड को वास॥ ४४

छंद उपवन बाग बाटिका बनीता उपमा को कहि सकै
आनैं सुनैं सकल तन धरिया छबि कहु को लहि सकै
शिव बिरंचि आदि सब देव इनकी कहु को लहि सकै
दास पतित मति थोर हीन बुद्धि सुख कसभनि सकै

सो॰ बिनती यही दयाल पार करो कर गहि हमें ॥ ॥
तुम बिन बिकल बेहाल यह दुख नाहीं जात सहि ४५

बिप्रन के नहिं आयो बुलाये। रैदास पूजा अधिक मनभाये
सधन की दारु बहुत हितलागी। रहेउ न पास लिपउ बैरागी।
बैरागिहि बहु दंड देखाई॥ फिरफिर नाय सधन गृह आई
अब कहलौं हरि करहु बखाना रीझ तुम्हारि कोऊ नहिं जाना
जयंचा सुर उतपात जो कीना। ताको मारा तुरत हरि लीना।
युधिष्ठिर यज्ञ पूर हरि कीन्हा। स्वर्ग दुंदुभी शष्टहिं दीन्हा॥
गुरु कर पुत्र तुरत तुम लायो। राक्षस ते तुम देव बचायो॥
मथत सिंधु तुम देव जिलावा हारे दैत्य पार नहिं पावा।
सन कादिक कर क्रोध समायो जय बिजयहिं मृत्युलोक पठायो
दै के श्राप अनुग्रह कीन्हा। भोग कराय मुक्ति फिर दीन्हा।

दो॰ ऐसे दीन दयाल हरि। राखत जन को मान
शरण गये प्रति पालहीं चारि हु युग परमान ५७

हरि सम दानि और जग नाहीं समुझि बिचार देख मनमाहीं।
याचक को करदेत अयाची। फिर नहिं जाय और घर याची
सुनि के बेद और बहु बानी। जहां सुना तहां याहि बखानी
ताही से बहु पेट खलावा। याचक है निज शरणहिं आवा
याचत याचत वेस सिरानी। सुनेहु न नाथ मोर कस बनी।
अस्तुति अर्ज़ लिखा बहु तेरी। दासी दास भयउ पद चेरी॥
नाचि गाय बहु शष्ट रिझावा योगयुक्ति करि देह जलावा
सौ सौ यत्न बहु कीन उपाई। हरि के मन कछु एक न भाई
अवगुण कहां निरख प्रभु मोरा है गयो प्रभु तुम कठिन कठोरा

दो॰ सियामातु की सप्त करि दुविधा नहिं कछु आन
तुम्हरे आस भरोस प्रभु चित बहु नेक निदान ५८
तन मन धन सब तोर है यंत्र करों चहे मन्त्र॥
पाप पुण्य के ईश हौं बिनती सुन भगवंत ५९

दास पतित की बिनती लीजे। मेटहु भरम अभयपद दीजे

अनतहिं नाथ नहीं चित जापै। तुमरे पद नित नेह लगावै।
यह बरदान नाथ मोहिं दीजै। इतना यश जग में प्रभु लीजै।
तब मैं जानहुं तुम प्रभु ताता नाहिं त सब हैं झूठ लबाता।
बिन देखे बिश्वास न आवै। खाये बिना स्वाद किमि पावै
जो तुम नाथ अनेकन तारी। तोमोहिं काहे नाथ बिसारी
जन अवगुण जो नहिं चित देत। आये शरण अपन करि लेत

दो॰ युग युग दरद सुनी हरि तुरतहिं कियो उबार
मोरि बार कस कृपण हो नाथ भई बड़ि बार ५०
दास पतित अति निलज हैं नहीं शरम कुछ लाज
हंसी तुम्हारि नाथ जी बिनती सुन महराज ५१

कैसे होय नाथ बिश्वासा। त्यागहुं भ्रम होहुं निज दासा
सो तो नाथ एको नहिं देखा। कृषी किसान भयो सो लेखा
जबलौं अन्न खेत उपराजा। तबलौं युक्ति अनेकन साजा
जौन खेत स्वारथ कछु नाहीं। तेहि मग से कबहूं नहिं जाहीं
अन्न हेत सेवहिं नित आई। गोड़ि निराय के बहुत बचाई
देखत रहैं नित नित जाई। दो सरि तिरिन होय नहि पाई

दो॰ स्वारथ हेत हिं मीत सब बिन स्वारथ नहि बात
तैसी रीति न कीजिये तुम हीं गुरु पितु मात॥५२

शरण पाल शरणहिं चित चीन्हा अवगुण पाप नहीं चित दीन्हा
बाल्मीक सुमिरण मत ठाना उलटा सीधा भेद न जाना॥
छूटे भेद ब्रह्म सम भयऊ। जानेहु जगत कीर्ति जस कयऊ
राव परीक्षित अस बलधारी। जन अपमान सो दंड करारी
भयो अभिमान परीक्षा लीना। मृतक व्याल डारि सो दीना
कीर को अंड रहै कैलासा। जहां शंकर पार्वती समाशा
तहवां मंत्र सुन्यो शिव पाहीं। सुनते अमर नाश तेहिं नाहीं
ऐसो नाम है नाथ तुम्हारा। शिव त्रिशूल दोऊ फिरि हारा।

जन के संग फिरौं दिन राती। मोरि न नाथ सुनहुं केहि भांती
दो॰ लाज शरम हरि राखिये मेटहु मोर कलेश॥
सब विधि बने निबाहिं उरंगो उ तुम्हारा भेष ५३
ऊधो परण जबै यह कीन्हा। उत्तर नाथ ताहि तुम दीन्हा।
करि कै सपथ कहेव अस नाथा। निशदिन रहौं भक्त के साथा
भक्त के साथ रहौं मैं कैसे। बाछा हेत धेनु रहै जैसे॥
बिना बछ वासे रहा न जाई। खान पान सो सकल भुलाई।
संत जाय तहवां संग जाऊं। भोजन खाय तहां सुख पाऊं
सोवै संत करौं रखवारी॥ पंथ चलत करौं छांह करारी।
जन सों वैर करै जो कोई॥ सो द्रोही मम करौं सप्त सोई।
सपथ है सत्य कहौं मैं तोही। जन कर दुख व्यापै अति मोही
तेहि कारण पुनि सहौं न भारा। मारि कुचाल लिहिं करौं मैं छारा
कीयह बचन झूंठ हरि कीजे। नाहिं तो लाज राखि मोरि लीजे
दो॰ निशि दिन व्याकुल हौं हरि तुम बिन पीर अपार
दास पतित को अयाच कर मांगत दाऊ द्वार॥५४
सो॰ अब केहि यों चोजाय नाहिं ओर कर तार है॥
उतपति प्रलय सु सांय चाहौ तो भवपार है॥५५
कहवां नाथ पुकारौं तोही। जहवां आय मिलो हरि मोही
हमतो सुना हरि सब घरबासी मोरि बार कस रमेहु मवासी।
मंडप नाथ होहु जो स्वामी। तामें जाकर करहुं नमामी॥
चर अरु अचर में होहु जो सांई तो तुम मगर होहु यहि ठाईं।
अब तो नाथ देर नहिं कीजे। यहि अवसर राखि प्रभु लीजे
गीषम चरतु भल काठ जरजैसा संतन द्रोही मिटै कुल तैसा।
नीर बिहीन मीन जिमि हानी जन के द्रोह जाय तिमि मानी
जैसे पतंग दीप जिमि साथा। तिमि अपकारी धुनि मेरे माथा
दो॰ एक पारव अरु मास में जो षष्ठी मास बचि जाय

फेरि बचाये ना बचै जरा मूल सों जाय ॥ ५६

दो॰ वेद पुराण आदि सब ऋषि मुनि कीहै बात ॥ ४
सो अचरज नहिं मानिये चारिहुं युग दिखरात ५७

जाकर वंश मिटै पर होई ॥ । छूटै नीति अनीत बसोई ॥
अधरम छांडि और नहिं भावै संत गुरु संग बैर बढ़ावै ॥
जहं सत संग धर्म कछु होई। कथा पुराण भजन सुनै कोई
तहां जाय अपकार बनावै। करै उपाधि होय नहिं पावै ॥
वही पाप से हानि जाई ॥ । वेद पुराण श्रुति अस गाई ॥
रहै न वंश सकल मिटि जाई। ग्रीषम ऋतु जस उपर सुखाई
संतन से जिन रारि मचाई ॥। कौन जियावै विष जिन खाई।
खायो विष जिन्ह सुधा अहारा भक्त विरोध भयो तिमि छारा।

दो॰ हरि बाना की लाज करि सहत न जनकर भार ॥
रावण अस बल वीर सो रह्यो न कुल परिवार ५८
दास पतित अब चेत कर भजिले करुणा सीव
जगत लाज प्रभु करत हैं कसना करि हैं पीव ॥ ५९

कहत पतित मन चेत गवारा। नाम भजहु तन काह सम्हारा।
अरे मूढ़ तोहि लाजन आई। राउ रंक फिरि याचन जाई ॥
फिरि कम करउ जगत कर दौरक सुख के हेत शीस मुड़ पौरक।
अरे अधम कस करसि उपाई। विधि निरवनी कोई फेरि बनाई
तजहु उपाय जगत की आसा। सुमिरहु नाम होहु निज दासा।
अरे मंद मति देखु विचारी। युग युग लीला अकथ करारी।
जिनके भयो एक नाम अधारा तिनके रहत राम रखवारा ॥
ऐसे हैं प्रभु दीन दयाला ॥ । सब विधि करत सेय प्रतिपाला

दो॰ जस जननी शिशु पालै कृषी खेत से हेत ॥
तस रक्षा प्रभु करत हैं नाना विधि सुख देत। ६०
कुटुंब कबीला आदि ए सब मतलब के यार।

थोरे में सब टूट हीं जिमि भकड़ी को तार॥६१
नैनन देखी है यह बाता ॥ शरणागत किजो सुनी विधाता
नहीं झूठ नहिं अपनि बड़ाई। बूझ व अर्थ मोरि कुटिलाई।
सरयू विदित अवध तेहि ठाऊं ता समीप गिरिधर पुर गाऊं
अबला नाम ब्रह्मणी एका। बसे ग्राम तेहि धरम विवेका
ताको दुष्टन अति दुख दीन्हा तब चलि आय कुटी गुरु चीन्हा
जहं गुरु करत रहो प्रभु ध्याना शीश नवाय विनय बहु ठाना
कह अबला दोऊ कर जोरी। दीनदयाल अरज सुन मोरी।
अबला जाति सो अहों गंवारी थोरे में मन होत दुखारी॥
वेद पुराण अगम घर स्वामी। बड़ बड़ कर नहिं सके नमामी
हरि माया कोऊ थाह न पाई। झिटका खाय बिना रघुराई॥
मन चंचल यह हाथ न आवे। बिन विश्वास बहुत बहि जावे
नाथ नाथ अरज सुनि लीजे। राम नाम अक्षर दुइ दीजे॥
दुख अरु सुख चला सब जाई करिय भजन परलोक बनाई।
कैसे सुमिरों श्री भगवाना। कैसे जाप करों कस ध्याना।
कौनि यतन सब कीन पुकारा। लागि न बेर सो तुरत उबारा।
दो॰ भ्रम विकार छूटे जिहि नाथ करहि प्रतिपाल॥
प्रगट होहु हरि आय के अबहीं करहु निहाल ६२
यह वरदान नाथ मोहि दीजे। पावहुं भक्ति अपन करि लीजे
कबहुं न नाथ छुटे पद नेहा॥ घर बन रहें जहां यह देहा॥
शिष्य गुरु कर उत्तर माना॥ कल्प वृक्ष विश्वास प्रधाना।
कहत पनित सुन प्रेम की बानी नेह की युक्ति मैं कहों बखानी
बिन विश्वास कार्य नहिं होवे। ताग बिहीन माल किमि पोवे
खाय बिन कह कौन अघाना। चले बिना कस पहुंच ठिकाना
कहे बिना कछु होय न काजा। पाप होय की पुण्य समाजा
कर्महिं नर्क स्वर्ग दिख राखे। जाय जहां की तेहि ले आवे।

ताते कर्म करहु चित लाई ॥ रीति चलो अनरीति बिहाई ॥
दो॰ रीति अनीत बिचारि के सुजन चलत चित लाय ॥
ताहि बिधाता दाहिनो दासपतिन गुण गाय ॥ ६३
कब अहिरा ने जपतप कीना। बांछित फल हरिता कहं दीना
कबहीं अबला बिनती लाई। दीन बंधु कछु अरज गुसाई ।
सब की कथा सुनी बहु बारा । अहिर मना नहिं सुनो हमारा
कैसी नाथ भई यह लीला ॥ ॥ कहो बुझाय अगम गुण शीला
कहत पतिस नें सुन मम बानी। दंत कथा यह कहों बखानी ॥
अकबर शाह शिकारहिं गयऊ। संगन कोउ नृपा अति भयऊ।
ताही समय अहिर एक आवा। लाय अहार अन्न पहुँचावा।
विधि संयोग मो कौन मिटावै। समय पाय तेहि आन मिलावै
सो॰ जहं दाना छितरान पहुँचे तहां जरूर सो ॥
चले प्रेम के बान पूर्व जन्म की भाग्य सो ॥ ६४
अकबर शाह खुशी अति भयऊ गयो बुलाय भवन निज गयऊ
कछु काल बीत जब जाई ॥ आही अहिर मिला तब आई।
पूंछत पूंछत दिल्ली आवा । सुनेहु नाहि मो तुरत बुलावा
चादरि एक कूप पर तानी । पढ़ै निमाज रेमि मति रानी
देखि अहीर मिलन जब धावा बैठन बिलग बहुत बैठावा
शाह अकब्बर कीन्ह विचारा मानन मूर्ख अहीर गवारा ।
जो तान्चल चदरि पर आई । क्रिया बिहीन कूप बिच जाई
समय पेर कर मीत है भाई । तेहिते मिलहु उतरि चित लाई
दो॰ समय बराबर जान नहिं राजा रंक गरीब ॥ ५ ॥
चतुर होय सो धीर धरि बूझै अपन नसीब ॥ ६५
बोले राउ मांगु सो लीजे ॥ । बोलि अहीर मम यह कीजे ।
करने कहा रहब तुम भाई । यह दुख गहि चादरी बिछाई
बोले शाह उतर यह दीना। चदरि बिछाय यहां मन कीना

मांगत रहेउं यही कर जोरी। राखहु खुशी सकल जग मोरी।
इतरी बचन सुनै जब पावा। उठि कर चला शीश तब नावा।
हमरी जान तुम्ही भगवाना तुम सों बड़ा और अब जाना।
दो॰ याचक से नहिं याचिये मांगि वही से जाय॥
जेहिं मांगे नहिं मांगनो प्राण रहै की जाय॥ ६६
असमत जाय अहीरहिं ठाना। बन बिच आइ लगायसि थाना।
किनो कर्तार मिलो तुम आई छड़िहौं माया नहीं जो पाई
राउ को दीन सोई मोहिं दीजो। मिलहु आय अब दरशन कीजो
अस बिश्वास जबै दृढ़ भयऊ। आय बिधाता तब कछु दयऊ
ताकर मोह अहीरन कीन्हा। लेकर वही गाड़ि सो दीन्हा।
आपतो कुछ भवन चलि आवा पूछे सबै कछु लै आवा॥
आदिह से सब कथा बताई। मिला बहुत सो धन धरि आई
यही बिचारि नहीं मैं लाई। इहां दीन सो धर पहुंचाई॥
तासन हेत नाथ अस कीना छपरा फारि दव्य तेहि दीना।
इतने महं सब लेहु बिचारी। को अब कहै ग्रन्थ बढ़ै भारी
अस परतीत मनहिं जब आवै बीतत निमिष सकल फल पावै
दो॰ माया दान पहिले करै तन अरु मन दै शीश॥
फिर मन का दरशन करै तुरत मिलहिं जगदीश ६७
स्वामि पतित बिनती सुनि लीजै। दासहिं चे रचरण की कीजै
यह बिनती मोरि सुनहु गुसांई। रामरूप कर ध्यान बताई॥
कह कहं लखहु राम करुपा। नेकन देव अनेक स्वरूपा॥
नेकन जाति चराचर जीवा। कोहि इष्ट राम रस पीवा॥
तुलसी दास लिखा अस बानी रामन सकहिं सो नाम बखानी
सोई नाम राज टेर सो कीन्हा। तुरत उबारि ताहि हरि लीन्हा
सोई नाम प्रहलाद पुकारा। हिरना कुश कर उदर बिदारा
सो स्वरूप बिन मिले गुसांई। तन मन पीर सो कैसे बुझाई

। तुम्हरे आस भरोस मम परउं चरण के तीर ॥
दो॰ अब बिलम्ब नहिं कीजिये हरौ सकल भवभीर ६८
बाना को हरि लाज करु क्षमो मोरि तकसीर।
सब बिधि चेरि तुम्हारि हौं बिनती सुन रघुबीर ६९
अगम अथाह राम कर रूपा । बरणि को सके कौन अस भूपा
सब संतन युत बिनय प्रसादू । सूक्षम कहौं सुनहु सम्वाद ॥
कहत पतित जग और न दूजा। रामहिं ध्यान राम जप पूजा ॥
रामहिं सतयुग रामहिं त्रेता । रामहिं द्वापर कलियुग जेता।
रामहिं कारज करता जानी । रामहिं कारज सकल बखानी
रामहिं सृष्टि राम उपराजी ॥ राम सवार राम है बाजी ॥
रामहिं राम रमा जग माहीं॥ राम बिहीन बिश्व है नाहीं
रामहिं रमा वेद यश गाई । रामहिं व्यष्टि समष्टि कहाई।
दो॰ रामहिं दिग्गज दिशा हैं रामहिं सकल बिराट
करता धरता राम हैं रामहिं स्राष्ट निहाट ॥ ७०
रामहिं क्षिति जल पवन प्रकाशा रामहिं शक्ति व अग्नि प्रकाशा
रामहिं इन्द्र वरुण कुबेरा । रामहिं लंकर शैल सुमेरा ॥
रामहिं धरम राम यम राऊ।। रामहिं दूत राम सब ठाऊ ॥
रामहिं स्वर्ग नर्क कैलाशा ।। रामहिं स्वामी रामहिं दासा।
रामहिं शिव शारद अरु शेशा। रामहिं बिष्णु बिरंचि गणेशा
रामहिं ऋषि मुनि तापस योगी रामहिं दैत्य राक्षस भोगी॥
रामहिं गंगा राम त्रिवेनी । रामहिं यमुना सब फल देनी
रामहिं सिय अरु सती सयानी राम सरिबी सकल भवानी
दो॰ रामहिं सरयू अवध पुर तात मात सब राम ॥
उतपति प्रलय सु रामहिं रामहिं कामिनि काम ७१
राम भालु अरु राम कपीशा । रामहिं रय्यत रंक है ईशा ॥
रामहिं सखा सखी सब जानी। रामहिं पंडित अरु गुरु ज्ञानी।

रामहिं गूँगा राम बोलैबानी। रामहिं मूर्ख राम जगजानी
रामहिं वृंद राम श्रुति भेदा। रामहिं न्याय व राम लवेदा॥
रामहिं वृक्ष राम हैं सारवा॥ रामहिं पात राम रस चारवा।
रामहिं ब्रह्म राम हैं माया॥ रामहिं रमा राम की छाया।
रामहिं चोर राम हैं साहू॥ रामहिं दण्ड हैं राम निबाहू।
रामहिं क्षीर नीर फल हीरा। रामहिं भूषण बसन अहारा।
दो॰ लख चौरासी योनि है। और अनेक उपाय॥
रामरूप अस जानिये दास पतित अस गाय ७२
रामहिं मिला राम हैं न्यारा॥ रामहिं मसजिद ठाकुर द्वारा।
राम नृसिंह राम प्रहलादा। रामहिं भक्त राम उन मादा।
रामहिं राम और नहिं कोई। कृष्ण आदि जग दीश्वर सोई
रामहिं मक्का राम मदीना॥ रामहिं हिन्दु तुर्क सब दीना॥
रामहिं अंगुरि राम नखूना। रामहिं हाड़ मांस खब सूना।
रामहिं नाड़ि राम हैं चामा। रामहिं रोम रमा हैं कामा॥
रामहिं क्रोध मोह मद लोभा। राम अविद्या अरु सब शोभा
रामहिं चांद सूर्य्य अरु दामा। रामन शकहिं गने निजनामा
रामहिं जीभ राम हैं काना। रामहिं नयन नासिका आना
रेचक पूरक रामहिं जानी। कुंभक तुरिया राम बखानी॥
रामहिं उनु मुनि अजपा रामा रामहिं त्रिकुटी शष्ठ हैं रामा॥
रामहिं स्वास सून्य हैं रामा॥ रामहिं निर्गुण सगुण हैं रामा
रामहिं सोहं और रकारा॥ राम तंत्र अरु यंत्र विचारा॥
वासुदेव नारायण नामा॥ रामहिं मंत्र गोर हैं श्यामा।
दो॰ भूत बैताल पिशाच सब टोटक तंत्र मशान॥
सकल जानिये राम मय धरु चरणन पर ध्यान ७३
रामहिं तिलक राम हैं भाला। रामहिं छाप राम धर्म शाला
रामहिं गुरु राम हैं चेला॥ रामहिं आदि अरु राम अकेला

कहलौं कहौं राम गुण गाई। राम कि राम थाह नहिं पाई॥
रामहिं कर यह रचा बनावा। रामहिं फेरि अथाह बनावा॥
ताते सूक्ष्म तोहि सुनाई। मति बुधि मोरि तहाँ लै गाई।
याही रूप करौं नित ध्याना। सोवत जागत परे उताना॥
जोनहिं कर्म करउ तुम साजा। सो तुम राम लखहु सिर ताजा
राम छांड़ि दूजा नहिं जानेउ। दृढ़ बिस्वास पोढ़ करि मानेउ
पाप अरु पुण्य जौन कुछ कीजे राखेव भेद राम लखि लीजे
दो॰ सुख सो कथनी नाकथे हृदय करै बिश्वास॥
फेरि जाल व्यापै नहीं मिटै सकल भव त्रास ७४
जितनी सृष्टि चराचर देखे॥ तनमन रूप नयन सो लेखे।
याबिधि निरखि रहे दिनराती पपिहि चकोर चन्द्र जिमि राती
गुप्त होय कि नयन के आगे। सब लखु राम भरम छलत्यागे
जो कछु रूप दृष्टि में आवे॥ तन मन दया न बैर बढ़ावे॥
आप तो समय राम कहँ जानी सुख दुख सहै न कहै कटुबानी
जो चाहै तमरारि मचावे॥ आप न हीं कुछ चित में लावै।
आप देखि बहु प्रीति बढ़ाई। सुजन होय तो यह मत पाई।
लखेन बैर देखि यहि भांती। ताहि बिधाता लावै छाती॥
श्यामल गात बिबिध बिधि शोभा सीय अनुज युत रहै मन लोभा
चक्र सुदर्शन और धनुबाना शीश मुकुट कुंडल कर ध्याना
दो॰ नयन कपोल व नासिका रेखा और बनमाल॥
धुध वारी छबि निरखि के अबतुम होहु निहाल ७५
चरण कमल की महिमा को करि शकै बखान
आठ पहर चौसठ घड़ी छुटै नहीं यह ध्यान। ७६
याहि बिधि लखै सकल घट माहीं सबसे हीन रहै दिल माहीं
करै परमार्थ बिरोधहिं नाहीं। करहिं निहाल तुरतहरि ताहीं
दुख जंजाल भर्म छुट जाहीं। मिथ्या सत्य झूठ कछु नाहीं।

यामें संशय करै मत कोई । व्यापक ब्रह्म आप से होई ॥
नहिं मोरि उक्ति बेद कह ऐसे । मुनि गुनि लिखा प्रह्लादहिं जैसे
सो सो दण्डपितहिं दिखराया राम छाड़ि कछु और न भावा
खड्ग और खंभ सकल घट माहीं देखहु राम अवर कछु नाहीं
ताहि हेत मुनि कृपा निधाना प्रगटे आय सकल जग जाना
मारेहु दुष्ट मिटा दुख भारी । ऋषि मुनि देव मंगला चारी
दो० सिय वर के तुम भजन करु होय नकपट अयाच
आपे आनि उबारि हैं कहत पतित यह सांच ॥ ७७
ऐसो सुयश होय ब्रत धारी । ताकी करहिं नाथ रखवारी
आपसे अव गुण लघु सम होई ताको अधिक बहुत लखि रोई
सबसों विनय करों करजोरे । अव गुण अधम अहै चित मोरे
नाहिं न धर्म नीति कछु जानी भयन कपूत कीन जिय हानी
कैसो करै धर्म ब्रत दाना । पर बस नाहिं अभिमान बखाना
जो आपन कोइ करै बड़ाई । ताहि सुने सो हर्ष न आई ।
सोई सुजन सो परम सयाने । पर निन्दा अप बाद न माने ।
दाया धर्म नीति चित आवै । खोजी होय पास हरि पावै ।
दो० पर दुख औ अपकारी अपन बढ़ावै मान
ताहि बिधाता ना सहै होय जो इन्द्र समान ॥ ७८
तुरत मिटावैं ताहि को जड़ा मूल सों जाय
फेरि बीज उगो नहीं छठो मास नहिं पाय ॥ ७९
पर अव गुण जो होय सुमेरा । रेनु समान कहै तेहि टेरा ॥ ८०
पर दुख दुखी होय अतिभारी पर सुख सुनि बहु होय सुखारी
धर्म पराव ननक भरि होई । कहै बनाय सबन से सोई ॥
यह तो अहै बड़ा ब्रत दानी धर्म बिहाय और नाहिं जानी
ताहि समान और नहिं दूजा जप तप दान यहीं बड़ पूजा ।
इतना भेद कहा अस गाई । करि बिश्वास चरण चित लाई

इतनो मान कहा मन मोरा ।भजहु नाम तजि दिलको कठोरा
नहिं बिश्वास जो आवे भाई । तत क्षण बात सो मगर दिखाई
जबै ब्राह्मणी अस दृढ़ कीना। तनमन ध्यान सबै दे दीना॥
सहज स्वभाव छोड़ि कुटिलाई सुमिरण सपद करे सेवकाई
तिहि को सब अपमानत काई। तेहि हरि आय के तुरत बचाई
सो तुम नयन न देखेउ भाई । तब हुं प्रतीत तुम्हें नहिं आई।
ऐ मन सुनु मति मन्द अभागी काहे न चरण कमल चित लागी
जिन ऐसन कर कीन उबारा। सो कस मोहिं न कीन्हेउ पारा
कछु अब गुण हरि मोर बिचारी जो नहिं बाना की शर्म निहारी
दो॰ सो सब भेद पीछलो कहो मोहिं समझाय ॥
दास पतित चित चरण दै सकल पदारथ पाय ८०
अबतो सुनहुं अवर जस गाई । हरि माया जस नाच नचाई॥
बंगाला शहर अरु सरयू तीरा। गुप्तार के पूरब पतित फकीरा
जबै म्लेच्छन लियो छोपाई। खान पान कछु जानन पाई।
तहंवां हरि रक्षा भल कीन्हा। खान अरु पान सकल सुख दीन्हा
दो॰ कुटी अजूब मनोहर संगति सब सुखवास॥
बंगाला के पश्चिम दिशा कियो पतित परकाश ८१
फाल्गुन शितहिं पक्ष में भाई। चन्द्र बार सो कुटी में आई।
सिंह लग्न द्वादसी बिचारी। हनुमत दृष्ट सो नेजा धारी।
उन इस से सम्वत दइ गाई । मन्दिर बैठ नाम लौ लाई ॥
निशि दिन ध्यान नाम गुण गावे सूक्ष्म खाय भागि सो आवे।
लोग न संग बैर नहिं मीता। करि प्रतिपाल राम औ सीता
दो॰ पहिली कुटी गिरधर पुर करि निज योग अपार॥
भये कुबुद्धी काल बश तिन कियो रारि बिकार ८२
सीधी रीति स्वभाव गुण संगति अपनो ध्यान
यथा शक्ति सूक्षम कहों दास पतित गह ज्ञान। ८३

संवत उन इस से अरु तीनी बंगला बास आय दृढ़ कीनी
नहं सुनि ब्राह्मणी हालकराई। जासों रारि करें अपकारी ॥४
उन सब दिन अस बात विचारी। तजे भजन की डारहु मारी।
यहे बिचारि रारि बहु ठाना। चोरी झगर कीन बहु नाना।
सब बिधि हारे करिके उपाई। योग दान ब्रत करे न पाई ॥
ऐसो कीन बहुत उन पाता। समझे पीर कही नाहिं जाता।
यतनी रारि अधिक उन ठानी कहत न बनै न मिथ्या बानी
जेहि गुरु इष्ट देव नहिं भावै। तेहि जानो कछु अन भल पावै
दो॰ शुभ अरु अशुभ के सर्व गुण आगम देत देखाय
होन हार हिरदय बसे अन होनी न सुहाय ॥८४
बहु उत्पात तेज की हानी ४। तेज हीन दुख पावै मानी ॥
हरि मरज़ी यह सब कहं भावै। अमृत में प्रभु बिष उपजावै
राजा रंक बूझ नहिं कोई। ४। रामदत्त निठुर भयो सोई ॥
जिन पाड़े तन मन धन दीन्हा कौनिहु बात उत्तर नहिं कीन्हा
तेकस अब कुछ नाहिं बिचारा ममता बश उन ठान बिकारा
छूटे धरम सुरती नहिं कोई। भजन बिचार बिहीन जो होई।
औ नहिं मान संत गुरु देवा ४। तेहि घर नित करि काल कलेवा
अब ब्राह्मणि कर सुनहु संदेशा जैसे निज हरि हरेउ कलेशा ४
जब वह अतिशय ब्याकुल भयऊ भई बेहाल गुरु पह गयऊ
दो॰ दया भाव नहिं भक्ति कछु पूजा नहिं ब्रत दान॥
नामकि लज्जा राखिये अब नहिं और ठिकान ८५
अस्तुति बिनय कीन्ह करजोरी। हे महराज सुनहु अब मोरी।
अब तो नाथ परों मझ धारा। होहु सहाय तो उतरों पारा
यह बिश्वास संत पद आई। मम करनी नहिं लखि कुटिलाई
यह सुन ब्याकुल भये गुरु सोरा रह्यो छिपाय बैठि जस चोरा॥
शरण शरण निज शरण पुकारी शरण जानि कर बन्द केवारी

इतनी पीर बिथा जब भयऊ। प्रगट दयाल दरश तब दयऊ।
वहां दास कर भयउ उबारा॥संत रूप प्रगटे कर तारा॥४॥
यहां गुरु निज लाज को मारा। मन्दिर छिपि करि बन्द केवारा
संवत उन्न इस सै अरु पांचा। सांची बात झूठ नहिं बांचा।
मन्दिर मांह भयो अति शोरा। हाहा कार उठेउ चहुं ओरा॥
यही अवाज गगन घहरानी। लीला सकल लिखो कछु बानी
दो० आय बिधाता प्रगट भे अज्ञा दई महराज॥
लिखि बिनती सब रूप की पूरे करौं सब काज ८६
यह सुनि सोय हरष मन आई। आज्ञा शीश बिनय बहु लाई
जस कछु बुद्धि रही मति मोरी। किहेंव अरम्भ लिखा कुछ थोरी
दीने लिखत रोज दुइ चारी तुरत पुकार सो सुन्यो मुरारी।
जो जो वैर करैं अपकारी। पायो दंड न छूटे बिकारी॥
जैसे युग युग संत उबारा। अनंद बधाव मंगला चारा।
तैसे हरि निज आनि उबारी। मेटी शोच दीन पद भारी॥
रिद्धि सिद्धि की कौन गनावै। मोक्ष मुक्ति गति स्वल्प कहावै
सकल चराचर हाथ हैं जिनके। नित ही दरशन पावैं तिनके।
मिटि गो भरम शोच सब भागी। चरण न कमल प्रेमरस पागी
अवधेश्वर ईश्वर महराजा। अगम अगोचर हैं शिर ताजा
जन की लाज राखु महराजा। भयो सहाय सुफल सब काजा
चक्र सुदर्शन हैं रखवारे॥ जन के हेत दुष्ट सब मारे॥
दो० दास पतित को अर्ज यह नाथ सुनहु दै कान
निज कर से दसरवत करी भक्ति दियो बरदान॥८७
निज मुख बचन कह्यो हरि कर गहि कीन सनाथ
जगन्नाथ के चरण पर पसो पतित दै माथ॥४॥८८
याही मग पग जो धरै ताहि सुलभ सब होय।
तीन लोक चौदह भुवन फेंट न पकड़ै कोय॥ ८९

सो॰ फेंट न पकड़े कोय गाजत फिरे जहान में ॥
बहुरि जन्म नहिं होय छूटि जाय यम त्रास से ८०
दो॰ दास पतित संशय हरे गरिब चरण के तीर॥
माया जाल भरम यह व्यापत नहिं कछु पीर। ८१
जो कुछ है सो नाथ को अर्पण सहित शरीर
दास पतित कछु बसि नहीं जाने श्रीरघुबीर ८२
अस्तुति अर्जी अगम है हार शेष महेश ॥
मति बुधि मेरी हीन अति भई सो गुरु उपदेश ८३
भूला बिसरा अक्षरन अदल बदल जो होय।
चूक हमारी क्षमा करि जोरि मिलावे सोय॥ ८४
जितनी सृष्टि चराचर बिनय करों शिर नाय।
दास पतित पर दया करि सबियाँ चूक मिटाय ८५
यथा परति पुस्तक लिखेउं सो अक्षर जस जोरि
पढ़न हार को अर्ज है मोहिं न दीजे खोरि। ८६
जो पढ़ि याही मत चले अजर अमर सो होय
रूप स्वरूपे में सदा ॥ अन्न अनन्त में जोय। ८७
गिरिधर पुर इटि आँव के हो गयो बीज विकार
साधू त्यागहिं मल समझ न सेन कहुँ उपकार ८८
इति श्री स्वामी पतित पावन स्य कृत पोथी विनय विश्वरु
प श्रीजगन्नाथ स्वामी की अर्जी विनय सम्पूर्णम्

इति

I